कारक

कारक में हम यह पढ़ते है कि एक वाक्य में जो पद हैं, उसमें कर्ता में कौन विभक्ति लगायेंगे, कर्म में कौन विभक्ति लगायेंगे। करण में कौन विभक्ति लगायेंगे। सम्पद्रान में कौन विभक्ति लगायेंगे। अपादन में कौन विभक्ति लगायेंगे और अधिकरण में कौन विभक्ति लगायेंगे।

इस प्रकार पूरा कारक प्रकरण यही बतायेगा कि किस पद में कौन सी विभक्ति लगेगी।

कारक के भेद

कर्ता कर्म च करणं, सम्प्रदानं तथैव च।
अपादान अधिकरणे, इत्याहुः कारकाणि ।।

अर्थात् कारक के 6 भेद है–

1. **कर्ता कारक**
2. **कर्म कारक**
3. **करण कारक**
4. **सम्प्रदान कारक**
5. **अपादान कारक**
6. **अधिकरण कारक**

1.कर्ता कारक : क्रिया से कर्ता का सीधा सम्बन्ध होता है।

उदाहरण :

1. कविः लिखति।
2. गुरुवः वदन्ति।
3. बाला पठति।

2. कर्म कारक : जिस वस्तु या व्यक्ति पर क्रिया का प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं जैसे :

1. बाला पुस्तकं पठति।
2. चित्रकारः चित्रं लिखति।

3. **करण कारक** : जिसकी सहायता से कार्य सम्पन्न हो, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे :

1. कृषिवलः हलेन कर्षति।
2. गुरुवः लेखन्या अलिखन्।

4. **सम्प्रदान कारक** : सम्प्रदान का अर्थ है देना। कर्ता जिसके द्वारा कुछ कार्य करता है, अथवा जिसे कुछ देता है, उसे व्यक्त करने वाले रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे :

1. अहं तस्मै पुरस्कारं ददामि।
2. भिक्षुकाय तण्डूलं देहि।
3. धनिकः निर्धनाय धनं यछतु।

5. **अपादान :** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का ज्ञान हो, वहां अपादान कारक होता है। जैसे :

1. फलानि तरुभ्यः पतन्ति।
2. देवताः स्वर्गात् आगच्छामि।

3. अहं विद्यलायात् आगच्छामि।

6. **अधिकरण कारक** : शब्द के जिस रूप से क्रिया के स्थान, समय तथा आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे :

1. पुष्पाणि लतायां विकसन्ति।
2. पर्णानि भम्यां पतन्ति।